International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 05-04-2022, Accepted: 20-04-2022, Published: 06-05-2022
Volume 8, Issue 3, 2022, Page No. 12-15

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित प्रबंधन के विविध व्यावहारिक सूत्र–एक अध्ययन

आशीष कुमार[1], ऊषा जायसवाल[2]
[1] शोधार्थी, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत
[2] सहायक प्राध्यापक, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

सारांश
प्रबंधन एक कला भी है और विज्ञान भी। प्रबंधन कैसे करना है? इस विषय पर हज़ारों पृष्ठों की अनेकों पाठ्यपुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। अनगिनत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलते हैं। बहरहाल, किसी भी पाठ्यपुस्तक या प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में बहुत से अलिखित नियम शामिल नहीं हैं, जो आपको अच्छा, प्रभावकारी और बेहतर प्रबंधक बनाते हैं। भारत वर्ष महापुरषों की कर्मभूमि रही है। इन्ही महापुरषों में एक नाम है पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य उन्होंने व्यक्ति निर्माण, समाज निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण, समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी तथा बहादुरी जैसे सूत्रों द्वारा जन सामान्य से लेकर विशिष्ट जनों को प्रभावित ही नहीं उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया। आचार्य श्री का लेखन एवं रचनात्मक व्यक्तित्व अत्यन्त महान एवं उदाहरणीय है। उन्होंने अपने जीवन काल में कृत 3500 से अधिक पुस्तकों की रचना की। यह अध्ययन उनके द्वारा प्रतिपादित प्रबंधन के विविध व्यावहारिक आयामों पर किया गया है।

मूल शब्दः प्रबंधन, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य, व्यावहारिक सूत्र

प्रस्तावना
वर्तमान परिद्रश्य में प्रबंधन एक उभरता हुआ कल्प है जिसमें दैनन्दनिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जाता है प्रबंध एक ऐसा पर्यावरण तैयार करने एवं उसे बनाए रखने की प्रक्रिया है जिसमें लोग समूह में कार्य करते हुए चुनींदा लक्ष्यों को कुशलता से प्राप्त करते हैं। Koontz. H. & Weihrich. H. (2010)[1] ने प्रबंधन को इस प्रकार परिभाषित किया है कि यह संगठन के परिचालन के नियोजन संगठन एवं नियंत्रण की प्रक्रिया है जो उद्देश्यों को प्रभावी एवं कुशलता से पूरा करने के लिए मानव एवं भौतिक संसाधनों में समन्वय के लिए की जाती है। "प्रबंध परिवर्तनशील पर्यावरण में सीमित संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए संगठन के उद्देश्यों को, प्रभावी ढंग से प्राप्त करने के लिए दूसरों से मिलकर एवं उनके माध्यम से कार्य करने की प्रक्रिया है। O'Donnell. C. & Koontz. H. (1974)[2] प्रबंधन सीखने के लिए समय, साधन, अनुभव, पात्रता, योग्यता आदि की आवश्यकता होती है, यह पात्रता हमें अनुभव के आधार पर मिलती है। (Robinson. E. M., 1953)[3]

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
भारत वर्ष महापुरुषों की कर्मभूमि रही है। (ब्रह्मवर्चस, 2012)[4] इन्ही महापुरुषों में एक नाम है पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य (आचार्य श्री)। पिता पंडित रूपकिशोर शर्मा एवं माता दान कुँवरी बाई के घर आश्विन कृष्ण त्रयोदशी, संवत 1968 (20 सितम्बर 1911) ग्राम आँवलखेड़ा, आगरा (उत्तरप्रदेश) में आचार्य श्री का जन्म हुआ। एक छोटे से गाँव से इस साधारण बालक के महापुरुष बनने की यात्रा का शुभारम्भ हुआ। (ब्रह्मवर्चस, 2015)[5] आचार्य श्री का कथन है ''जब हर व्यक्ति ईमानदारी, समझदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी की नीति अपनाकर श्रमशीलता, सभ्यता और सुसंस्कारिता को व्यवहारिक जीवन में स्थान देने लगेगा, तो देखते देखते समस्याओं के रूप में छाया अंधकार मिटता चला जाएगा।'' (शर्मा, श.ए 2007)[6]

पत्रकारिता एवं स्वतंत्रता आन्दोलन
आचार्य श्री का कार्य क्षेत्र पत्रकारिता से प्रारंभ होता है। बाबू गुलाब राय से विशेष लेखन कला का शिक्षण कर 1927–28 में श्री कृष्ण दत्त जी पालीवाल के सैनिक अखबार में सक्रिय सहयोग दिया। स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों के त्याग, बलिदान, शौर्य और सत्याग्रह का प्रचार प्रसार इसी के द्वारा किया। तत्पश्चात् आचार्य श्री 'मत्त प्रलाप' स्तम्भ से छपे अपने लेखों तथा गीतों के माध्यम से स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रान्ति की ज्वाला भड़काने लगे, एवं इसमें सफलता भी प्राप्त की। स्वाधीनता के पश्चात् आचार्य श्री धर्मतन्त्र के माध्यम से लोक शिक्षण की लेखन पुस्तकों एवं का प्रकाशन करते रहे। इनमें अधिकतर अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामण्डी, मथुरा से अखण्ड ज्योति मासिक, गायत्री तपोभूमि से युग निर्माण योजना, युग शक्ति गायत्री, महिला जागरण अभियान आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन आचार्य श्री ने विधिवत किया। उक्त के अतिरिक्त बाद में आचार्य श्री ने व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण, समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी तथा बहादुरी रूपी सूत्रों द्वारा प्रेरक साहित्य का लेखन, प्रकाशन एवं नव चेतना के जागरण के लिए इसका प्रचार प्रसार किया। आचार्य श्री लिखते है भारी खोज, गहन मंथन एवं व्यक्तिगत अनुभव की छत्रछाया में ही लिखा गया है। (शर्मा, श., 2007)[7]

लेखन एवं वृक्तत्व कला

आचार्य श्री का लेखन एवं रचनात्मक व्यक्तित्व अत्यन्त महान एवं उदाहरणीय है। उन्होंने अपने जीवन काल में 3200 से अधिक पुस्तकों की रचना की। उन्होंने सम्पूर्ण भारतीय आर्ष वांग्मय का सरल एवं जन सामान्य की भाषा में भाष्य कर प्रकाशित किया। इसमें चार वेद, 108उपनिषद्, 18 पुराण, 100 स्मृतियाँ तथा 6 दर्शन हैं, इसके अलावा जितनी भी पुस्तकों की रचना की वे सब जीवन के सभी पहलुओं पर उत्कृष्ट मार्ग दर्शन प्रदान करते हैं। उनकी दिनचर्या में न्यूनतम 5–6 घंटा प्रतिदिन साहित्य लेखन का क्रम रहा। प्रज्ञापुराण आचार्य श्री की एक महत्वपूर्ण रचना है। आचार्य श्री ने सर्वदा वाणी एवं लेखनी के माध्यम से विचारक्रान्ति के सन्देश को जन–जन तक पहुँचाने का लक्ष्य रखा। आज देश–विदेश के अधिकतम शैक्षिक, सामाजिक तथा विशिष्ट प्रतिष्ठानों में आचार्य श्री का चिंतन जनमानस में परिवर्तन का आधार बन रहा है। आचार्य श्री कहते है कि वाणी और कर्म जब मिल जाते हैं तो व्यक्तित्व प्रखर बन जाता हैं। (शर्मा, श., 2017)[8]

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित प्रबंधन के विविध व्यावहारिक सूत्र

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार ''हर छोटे–बड़े काम को करने में पहले उसकी सही योजना बनानी पड़ती है, और सफलतापूर्वक कार्यान्वित करनी पड़ती है। योजनाक्रम को योजनाबद्ध रीति से चला सकना अपने ढंग का अति महत्वपूर्ण कला–कौशल है।'' (शर्मा, श., 2011)[9] जिन्हें यह आता है, वे गई–गुजरी परिस्थितियों एवं कठिनाइयों के बीच रहते हुए भी प्रगति का मार्ग ढूंढ़ निकालते हैं और उस पर समझदारी के साथ चलते हुए उन्नति के उस शिखर तक जा पहुँचते हैं जिसमें सफलता, प्रसन्नता और प्रतिष्ठा का भरा–पूरा वातावरण रहता है। जो मार्ग दर्शन कर सकता है, जिसमें किसी कार्य के साथ जुड़े हुए अनेकानेक प्रश्नों को समय रहते समझ लेने और तदनुरूप समाधान निकालने की क्षमता है, समझना चाहिए कि वहीं अपने उपक्रम का मेरुदण्ड है। ऐसे व्यक्ति जहाँ भी दायित्व संभालते हैं वहीं सफलता के चार–चाँद लगा देते हैं। समय के साथ बदलती परिस्थितियां दिन प्रतिदिन नित नई चुनौतियां प्रस्तुत करती हैं। इन जटिलताओं के मकड़जाल में मानसिक तनाव, अनियमित कार्यप्रणाली, विलम्बन और अपूर्णता प्रहार करती है। ऐसे में हताशा, कुंठा और निराशा का दावानल अपना प्रभाव दिखाकर प्रबंधन पर कुठाराघात करने लगते हैं। (Templar, R. 2008)[10] असमान्य परिस्थितियों के धरातल पर बहुआयामी जीवन को जीने की व्यवहारिक कला सीख कर यथार्थ के समीप पहुंचना सहज नहीं है। हर किसी को प्रबंधक बनने की क्षमता का विकास करना चाहिए। भले ही उसे किसी मिल, कारखाने, पार्टी, फैक्टरी, स्कूल आदि में प्रबन्धक के पद पर नियुक्त होने का अवसर न आये। क्योंकि जीवन की अधिकांश प्रक्रिया पारस्परिक आदान–प्रदान, सहयोग पर निर्भर है। (शर्मा, श., 2010)[11]

आचार्य श्री द्वारा प्रतिपादित युग निर्माण सत्संकल्प प्रबंधकीय स्वरुप में

आचार्य श्री युग निर्माण सत्संकल्प पर लिखते है कि ''आज प्रत्येक विचारशील व्यक्ति यह अनुभव करता है कि मानवीय चेतना में वे दुर्गुण पर्याप्त मात्रा में बढ़ चले हैं, जिनके कारण अशांति और अव्यवस्था छाई रहती है। इस स्थिति में परिवर्तन की आवश्यकता अनिवार्य रूप से प्रतीत होती है युग निर्माण सत्संकल्प उसी दिशा में एक सुनियोजित कदम है।'' (शर्मा, श., 1962)[12] इस घोषणापत्र में सभी भावनाएँ आदर्श परंपरा के अनुरूप एक व्यवस्थित ढंग से सरल भाषा में संक्षिप्त शब्दों में रख दी गई हैं। दूसरों को उपदेश करने की अपेक्षा इस संकल्प पत्र में आत्म–निर्माण पर सारा ध्यान केंद्रित किया। (शर्मा, श., 2010)[13] विभिन्न प्रकार के व्यवसायी एवं गैर व्यावसायिक संगठन भी प्रबंधन के व्यावहारिक सूत्र इस युग निर्माण सत्संकल्प को अपनाकर प्राप्त कर सकते है जो निम्न प्रकार है–

तालिका 1

S. No.	युग निर्माण सत्संकल्प	प्रबंधकीय स्वरूप
01	हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।	Self-Discipline
02	शरीर को भगवान् कामंदिर समझकर आत्म–संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।	Control
03	मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।	Reading Habits
04	इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत् अभ्यास करेंगे ।	Practice
05	अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।	Social Well Being
06	मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।	Duty
07	समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।	Wisdom, Honesty, Responsibility and Bravery
08	चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।	Cleanliness, Simplicity and Gentleness
09	अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।	Righteousness
10	मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों	Good thoughts and

	को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।	deeds
11	दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।	Equality
12	नर–नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।	Pure Sight
13	संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।	Contribution
14	परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।	Understanding
15	सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नव–सजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।	Creativity
16	राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे।	Loyal to National
17	जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।	No Discrimination
18	मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, तथा हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा ।	Believe in yourself

युग निर्माण योजना प्रबंधन के विभिन्न पक्षो को संजोये हुए है और साथ ही साथ जन सामान्य के लिए भी सफल, कारगार एवं उपयुक्त है। जिस प्रकार कोई भी प्रबंध बिना लक्ष्य एवं उद्देश्यों के कार्य सम्पादित नहीं करता है उसी प्रकार आचार्य श्री भी विशिष्ट लक्षों एवं उद्देश्यों का प्रतिपादन करते है। वे मनुष्य में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़े और व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण, समाज निर्माण, स्वस्थ शरीर, स्वच्छ मन और सभ्य समाज जैसे उद्देश्यों पर कार्य कर रहे है। एक राष्ट्र, एक भाषा, एक धर्म, एक शासन जैसे सामान अवसर एवं वातावरण की वे व्याख्या करते है। लिंगभेद, जातिभेद, वर्गभेद से ऊपर उठकर सबको विकास का अवसर पर जोर देते है। सेल्फ डेवलपमेंट के लिए आत्मनिर्माण के दो सूत्र–उत्कृष्ट चिन्तन एवं आदर्श कर्तृत्व तथा सादा जीवन–उच्च विचार जैसे सूत्रों से जीवन निर्माण की राह बतलाते है। (शर्मा, श., 1999) [14] आचार्य श्री के माध्यम से विभिन्न आधारभूत कार्यक्रमों का सञ्चालन भी किया जा रहा है जैसे – नैतिक क्रांति, बौद्धिक क्रांति, सामाजिक क्रांति, धर्मतंत्र–आधारित विविध माध्यमों से लोकशिक्षण, सामूहिक विवेकशीलता एवं यज्ञ–सहकारितायुक्त सत्कर्म। प्रबंधन के अपने टैग लाइन, लोगो, पञ्च लाइन होते है वैसे ही आचार्य श्री ने गायत्री परिवार के लिए उद्घोष दिया है – हम बदलेंगे–युग बदलेगा, हम सुधरेंगे–युग सुधरेगा, इक्कीसवीं सदी –उज्ज्वल भविष्य तथा सबकी सेवा – सबसे प्रेम। लोगो के रूप में गायत्री परिवार का प्रतिक चिन्ह लाल मशाल को बनाया गया है जिसका अर्थ होता है – समग्र क्रान्ति के लिए सामूहिक सशक्त प्रयास–युग शक्ति का विकास। आचार्य श्री कुछ मान्यताओं पर प्रकाश डालते है जैसे – मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। जो जैसा सोचता और करता है, वह वैसा ही बन जाता है। नर–नारी परस्पर प्रतिद्वन्द्वी नहीं, पूरक हैं। जीवन निर्माण के चार सूत्र – साधना, स्वाध्याय, संयम, सेवा। तीन आधार–उपासना, साधना, आराधना। चार चरण– समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी। इस प्रकार पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य प्रबंधन के विविध व्यावहारिक सूत्र का वर्णन करते है। (शर्मा, श., 1998) [15]

उपसंहार

वर्तमान अध्ययन ने प्रबंधन के विविध व्यावहारिक सूत्रों को उजागर करने का प्रयास किया है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने सहज प्रबंधन और स्व पात्रता बढ़ाने वाला दृष्टिकोण दिया। सहज–प्रबंधन ने उनके परम विवेक, बुद्धि और दूरदर्शी क्षमता को प्रतिबिंबित किया, जबकि उनका साहित्य शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक प्रगति से संबंधित उनके विशेष ज्ञान का वर्णन करता है। अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक की मानवीय जीवन लीला वर्तमान समय में प्रेरणा पुंज बनकर विश्व के करोड़ों लोगों के आत्म विश्वास को संतुष्टि के मार्ग प्रशस्त कर रही है। विज्ञान, दर्शन, कला, साहित्य, संगीत, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, पराविज्ञान, सूक्ष्म जगत सहित अनगिनत गूढ़ विषयों के साथ प्रबंधन के अनसुलझे रहस्यों पर भी आचार्य श्री की वाणी, लेखनी एवं प्रत्यक्ष जीवन ने अभिप्रेरणा का कार्य कर दिखाया है। यह शोध अध्ययन पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के प्रबंधकीय विचार, नवीन दृष्टिकोण के रूप में, नयी प्रणाली को विकसित करने और नए उपायों की खोज के लिए वैचारिक संरक्षक के रूप में कार्य करेंगा।

संदर्भ सूची

1. Koontz H, Weihrich H. Essentials of Management. McGraw-Hill, 2010, 2-3.
2. O'Donnell C, Koontz H. Essentials of Management. McGraw-Hill, 1974.
3. Robinson EM. Business organization and practice. Gregg Pub. Division, McGraw-Hill, 1953.
4. ब्रह्मवर्चस (2012). पं. श्रीराम शर्मा आचार्य दर्शन एवं दृष्टि. श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट. हरिद्वार, पृष्ठ 06.07
5. ब्रह्मवर्चस (2015). ऋषि युग्म का परिचय. युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट. मथुरा पृष्ठ 02
6. शर्मा, श. (2007). समस्याएँ आज की समाधान कल के. युग निर्माण योजना प्रेस. मथुरा पृष्ठ 19
7. शर्मा, श. (2007). परिवर्तन के महान क्षण. युग निर्माण योजना. मथुरा पृष्ठ 20
8. शर्मा, श. (2017). लोकसेवियों के लिए दिशाबोध. युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट. मथुरा पृष्ठ 44
9. शर्मा, श. (2011). प्रबंध व्यवस्था एक विभूति–एक कौशल. युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट. मथुरा पृष्ठ 04
10. Templar, R. (2008). The rules of management (Third ed., Vol. 1). Pearson Power. Page - 126
11. शर्मा, श. (2010). व्यवस्था बुद्धि की गरिमा. युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट. मथुरा
12. शर्मा, श. (1962, March). अखण्ड ज्योति. ज्ञान यज्ञ का महान् अभियान, अखण्ड ज्योति संस्थान. मथुरा पृष्ठ 29.30
13. शर्मा, श. (2010). इक्कीसवीं सदी का संविधान. युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट. मथुरा

14. शर्मा, श. (1999). अनाचार से कैसे निपटें?. युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि. मथुरा
15. शर्मा, श. (1998). अध्यात्मवाद ही क्यों?. युगांतर चेतना प्रकाशन, शांतिकुंज. हरिद्वार